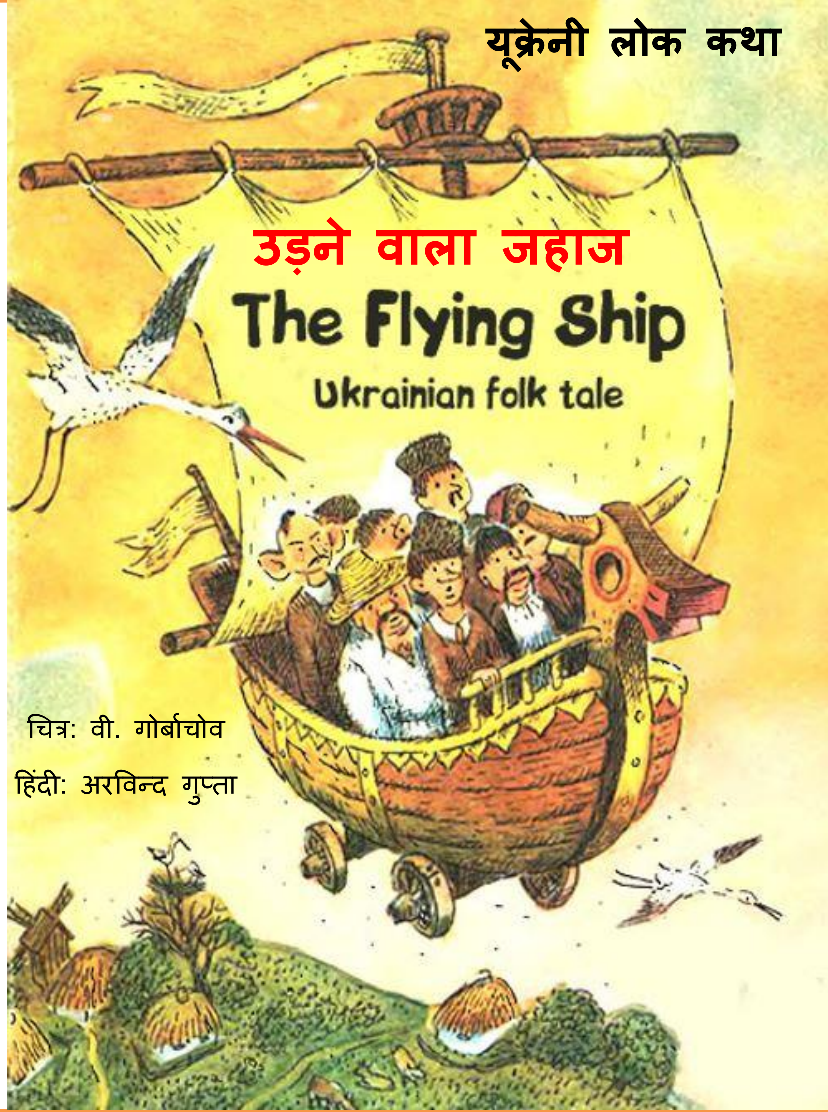
यूक्रेनी लोक कथा

उड़ने वाला जहाज

The Flying Ship

Ukrainian folk tale



चित्र: वी. गोर्बाचोव

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

कभी एक बूढ़ा आदमी और एक बूढ़ी औरत रहते थे. उनके तीन बेटे थे, उनमें से दो चतुर थे पर तीसरा मूर्ख था. दोनों बूढ़े-बूढ़ी अपने दोनों चतुर बेटों से बहुत प्यार करते थे, और हर हफ्ते बुढ़िया उन्हें पहनने के लिए एक-एक नई शर्ट देती थी. लेकिन जहां तक उस मूर्ख की बात है, हर कोई हमेशा उसका मज़ाक उड़ाता था और उसे डांटता था. वो अपनी खुरदुरी सूती कमीज पहनकर चूल्हे के पास ही बैठा रहता था और अगर बुढ़िया उसे खाने के लिए कुछ नहीं देती तो वो वहीं भूखा सो जाता था.

एक दिन गाँव में खबर आई कि राजा ने एक दावत में अपनी पूरी प्रजा को आमंत्रित किया है और उसमें राजकुमारी उस शख्स से शादी करेगी जो एक उड़ने वाला जहाज बनाएगा और उसमें सवार होकर महल में आएगा.

उसके बाद दोनों चतुर भाई जंगल में गए, उन्होंने एक पेड़ काटा और सोचने लगे कि वे उससे एक उड़ने वाला जहाज कैसे बनाएं, तभी एक बहुत बूढ़ा आदमी, उनके पास आया.



"आपको हाथों को अधिक शक्ति!" उसने कहा. "मुझे ज़रा माचिस दो, क्योंकि मैं अपनी चिलम पीना चाहता हूँ."

"हमारे पास तुम्हारे लिए समय नहीं है, बूढ़े आदमी!" दोनों भाइयों ने उत्तर दिया और वो फिर से जहाज के बारे में सोचने लगे.

बूढ़े आदमी ने कहा, "तुम सूअरों के खाने के लिए एक अच्छी नांद ही बना पाओगे. लेकिन तुम सिर्फ अपने कानों को देखोगे और राजकुमारी को कभी नहीं देख पाओगे."

इसके साथ ही वो बूढ़ा आदमी गायब हो गया, और जहां तक दोनों भाइयों की बात है, उन्होंने जहाज बनाने की बहुत कोशिश की और तमाम प्रयास किए लेकिन उन्हें कुछ भी हासिल नहीं हुआ.

"चलो हम अपने घोड़ों पर सवार होकर शहर चलें," दोनों में से बड़े भाई ने कहा. "हो सकता है कि हम राजकुमारी से शादी न कर पाएं, लेकिन कम-से-कम हम दावत में तो हिस्सा लेंगे."

फिर उनके बूढ़े माता-पिता ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उनकी यात्रा की तैयारी में मदद की. बूढ़ी औरत ने उनके लिए कुछ बढ़िया सफेद डबलरोटी पकाई, उनके लिए एक पूरे सूअर का मांस भूना और साथ ले जाने के लिए उन्हें अच्छी यूक्रेनी वोदका की एक बोतल भी दी.

दोनों भाई अपने घोड़ों पर सवार हुए और शहर के लिए रवाना हुए. जब मूर्ख भाई को इसके बारे में पता चला तो उसने भी अपने माता-पिता से भाइयों के पीछे जाने की जिद्द की.



"मैं भी वहां जाना चाहता हूं जहां मेरे भाई जा रहे हैं!" उसने कहा.

"तुम एकदम मूर्ख हो!" उसकी माँ ने कहा. "देखो, जंगल में तुम्हें भेड़िये खा जायेंगे."

"नहीं, वे ऐसा नहीं करेंगे!"

और क्योंकि मूर्ख बेटा बिल्कुल मानने को तैयार नहीं था, इसलिए मां-बाप ने उसे भी जाने दिया.

फिर बुढ़िया ने कुछ बासी काली डबलरोटियां और एक बोतल में पानी भरकर उसके लिए एक थैले में पैक किया. फिर उन्होंने मूर्ख को थैला दिया और उसे यात्रा पर भेज दिया.

मूर्ख जंगल की ओर चला गया, और जब वो जंगल के करीब पहुंचा तो उसने देखा, एक बूढ़ा आदमी उसकी ओर आ रहा था. वो आदमी बहुत बूढ़ा था और उसकी सफेद बर्फ जैसी दाढ़ी थी जो उसकी कमर तक पहुंच गई थी.

"हेलो, दादाजी!" मूर्ख ने कहा.

"हेलो, मेरे बेटे!"

"आप कहाँ जा रहे हैं, दादाजी?"

"मैं पूरी पृथ्वी पर घूम कर मुसीबत में फंसे लोगों की मदद करता हूँ. अच्छा तुम कहाँ जा रहे हो?"

"राजा ने अपने महल में एक दावत आयोजित की है."

"तो क्या तुम ऐसा जहाज़ बना सकते हो जो स्वयं उड़ सके?"

"नहीं, वो तो मैं नहीं कर सकता हूं."

"तो फिर तुम वहां क्यों जा रहे हो?"

"क्योंकि मेरे भाई वहां गए हैं, इसलिए मैं भी वहां जाना चाहता हूं! शायद वहां जाकर मेरी तकदीर खुल जाए."

"बहुत अच्छा. बैठो और आराम करो और कुछ खाओ. मुझे दिखाओ कि तुम्हारे उस बैग में क्या है."

"लेकिन, दादाजी, मेरे पास बस कुछ बासी काली डबलरोटियां हैं, वो आपको बिल्कुल पसंद नहीं आएंगी."

“कोई बात नहीं, उन्हें बाहर तो निकालो.”

मूर्ख ने थैले में हाथ डाला और कुछ डबलरोटियां बाहर निकालीं, और वाह - वो बिल्कुल भी बासी या काली नहीं थीं, बल्कि वो एकदम हल्की और ताज़ी थीं और बढ़िया गेहूं की बनी थीं, जिस तरह की डबलरोटियां राजा लोग छुट्टियों में खाते हैं. यह देखकर मूर्ख को आश्चर्य हुआ, लेकिन बूढ़ा केवल हंसा.



उन्होंने अच्छा आराम किया और भरपेट खाना खाया, फिर बूढ़े व्यक्ति ने मूर्ख को धन्यवाद दिया और कहा:

"मेरी बात सुनो, मेरे बेटे, और जैसा मैं कहता हूं वैसा ही करो. जंगल में जाओ और वहां सबसे बड़े बांझ (ओक) के पेड़ को ढूंढो, जिसकी शाखाएं आड़ी-तिरछी बढ़ रही हों. अपनी कुल्हाड़ी से उस पर तीन बार वार करो और फिर खुद जमीन पर गिर जाओ और तब तक मत उठो जब तक तुम्हें किसी के बुलाने की आवाज सुनाई न दे. तब तक तुम्हारे लिए उड़ने वाला जहाज तैयार हो चुका होगा और तुम उसमें सवार होकर जहां तुम्हारा मन हो वहां जा सकोगे. लेकिन एक चीज तुम अवश्य करना और वो यह है कि रास्ते में तुम्हें जो भी लोग मिलें उन्हें अपने साथ ज़रूर लेकर जाना."

मूर्ख ने बूढ़े व्यक्ति को धन्यवाद दिया और उनसे अलविदा कहा. फिर वो जंगल में गया, उसे वो बांझ (ओक) का पेड़ मिला जिसकी शाखाएं आड़ी-तिरछी बढ़ी हुई थीं, उसने अपनी कुल्हाड़ी से उस पर तीन बार वार किया, और फिर वो खुद जमीन पर गिर गया और सो गया. धीरे-धीरे उसने सुना कि कोई उसे बुला रहा था.

"उठो, एक बड़ा सौभाग्य तुम्हारे पास आया है!" उस आवाज ने कहा.

मूर्ख उछल पड़ा, और जोर से चिल्लाया - उसने अपने सामने एक उड़ने वाले जहाज को देखा जो सोने का बना था और जिसके मस्तूल चांदी के और पाल रेशम के बने थे. अब उसे बस उसमें चढ़ना था और फिर उसका मन जहां चाहे वो वहां जा सकता था.

इसलिए वो बिना कुछ सोचे-समझे जहाज में चढ़ गया, उसने पाल लहराया और दूर चला गया!

वो जहाज कितनी तेजी से और आसानी से आगे बढ़ रहा था!

मूर्ख उड़ता रहा, और जब कुछ समय बीता, तो उसने नीचे, जमीन पर लेटे हुए और अपना एक कान ज़मीन से सटाए हुए, एक आदमी को देखा.

"तुम्हारा दिन शुभ हो, भले आदमी. लेकिन तुम वहां क्या कर रहे हो?" मूर्ख ने पूछा.

"मैं ध्यान से सुन रहा हूं, क्योंकि मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या राजा के सभी मेहमान महल में एकत्र हो गए हैं."

"क्या तुम भी वहां जा रहे हो?"

"हां!"

"फिर अंदर आओ, और मैं तुम्हें वहां ले चलूंगा."

वो आदमी जहाज़ पर चढ़ गया और फिर वे दोनों एक साथ उड़े!



कुछ समय बीत गया, और वहां नीचे उन्हें एक और आदमी दिखाई दिया. वो एक पैर पर उछल-कूद कर रहा था और उसने अपना दूसरा पैर अपने कान से बांधकर रखा था.

"तुम्हारा दिन शुभ हो, अच्छे आदमी!" मूर्ख ने कहा. "तुम वहां केवल एक पैर पर क्यों उछल-कूद कर रहे हो?"

"अगर मैं अपने दोनों पैरों का उपयोग करूंगा तो मेरा एक कदम मुझे पूरी पृथ्वी का चक्कर लगवा देगा, और मैं वैसा नहीं करना चाहता हूं!" आदमी ने जवाब दिया.

"लेकिन तुम कहां जा रहे हो?"

"महल में, राजा की दावत में शामिल होने के लिए."

"फिर तुम भी हमारे साथ चलो. मैं तुम्हें वहां ले जाऊंगा."

"बहुत अच्छा!"



वो आदमी भी जहाज़ पर चढ़ गया और फिर वे तीनों उड़े!

कुछ समय बीत गया, और फिर उन्होंने अपने नीचे एक शिकारी को अपने धनुष और बाण से निशाना साधते हुए देखा. उसका लक्ष्य क्या था, वे नहीं बता सके, क्योंकि उसके चारों ओर एक विस्तृत मैदान फैला हुआ था, जहां कोई पक्षी या जानवर दिखाई नहीं दे रहा था.

"तुम्हारा दिन शुभ हो, अच्छे आदमी!" मूर्ख ने कहा. "तुम्हारा लक्ष्य कहां है? मुझे कहीं भी कोई पक्षी या जानवर दिखाई नहीं दे रहा है."

"शायद आप वो सोचते हों! आप उसे नहीं देख पाएंगे, लेकिन मैं उसे देख रहा हूं."

"वो तो बहुत अच्छा है?"

"हाँ! यहां से सौ मील दूर उस जंगल के पार एक ओक (बांझ) के पेड़ पर एक चील बैठी है."

"तो आओ, तुम भी हमारे साथ जहाज में अंदर आओ!"

फिर वो आदमी जहाज़ पर चढ़ गया और वे चारों दूर उड़े!



कुछ समय बीता और फिर उन्होंने एक बूढ़े आदमी को नीचे सड़क पर चलते हुए देखा. वो डबलरोटी की एक बोरी ले जा रहा था.

“इतनी जल्दी में आप कहां जा रहे हैं, दादाजी?” मूर्ख ने पूछा.

"डबलरोटी लाने के लिए, क्योंकि जल्द ही रात के खाने का समय हो जाएगा!" आदमी ने उत्तर दिया.

"लेकिन आपके पास तो पूरा बोरा भर के डबलरोटियां हैं!"

"वो सच है, लेकिन वो मेरे लिए पर्याप्त नहीं है. वो सारी डबलरोटियां मैं एक कौर में निगल जाऊंगा!"

"फिर आप भी हमारे साथ आएं, हमारे जहाज में आएं!"

वो बूढ़ा आदमी जहाज़ पर चढ़ गया और फिर वे पांचों दूर उड़े!

कुछ समय बीता और फिर उन्होंने अपने नीचे एक और बूढ़े व्यक्ति को देखा. वो एक झील के किनारे चल रहा था और ऐसा लग रहा था मानो वो कुछ खोज रहा हो.

"आप वहां क्या कर रहे हैं, दादाजी?" मूर्ख ने पूछा.

"मैं कुछ पानी ढूंढ रहा हूं, क्योंकि मुझे बहुत प्यास लगी है!" बूढ़े ने जवाब दिया.

"लेकिन आपके ठीक सामने एक बड़ी झील है!"

"सच है, लेकिन मैं उस झील का सारा पानी एक घूंट में पी सकता हूँ."

"फिर आप भी हमारे साथ आएं, हमारे साथ जहाज में चढ़ें!"

बूढ़ा आदमी जहाज़ पर चढ़ गया और फिर छह लोग उड़ने लगे!

कुछ समय बाद उन्होंने अपने नीचे एक अन्य बूढ़े आदमी को देखा. उसके कंधे पर भूसे की एक बोरी थी और वो सड़क पर धीरे-धीरे चल रहा था.

"आपका दिन शुभ हो, दादाजी! आप वो भूसा कहाँ ले जा रहे हैं?" मूर्ख ने पूछा.

"उस गांव की ओर."

"क्या वहां पर भूसा नहीं है?"

"वहां भी भूसा है, लेकिन उस तरह का नहीं है, जैसा मेरे पास है!"

"और आपके पास किस प्रकार का भूसा है?"

"एक विशेष प्रकार का. इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि दिन कितना गर्म है और सूरज कितना तेज़ है, मैं बस उस भूसे को ज़मीन पर बिखेर दूंगा और वो बर्फ में बदल जाएगा."



"आओ, तो फिर आप भी हमारे साथ चलें. हम एक साथ राजा से मिलने चलेंगे!"

"बहुत अच्छा."

वो बूढ़ा आदमी जहाज़ पर चढ़ गया और फिर वे सातों दूर उड़े!

कोई नहीं जानता कि वे बहुत लंबे समय तक उड़े या बहुत थोड़े समय के लिए, लेकिन अंत में वे महल में पहुंच गए. वे दावत के लिए बिल्कुल ठीक समय पर पहुंचे.

आंगन में शराब और बीयर के भरे पीपे सज़े थे, और महल के सामने की मेजें भोजन से भरी हुई थीं: बैलों का मांस, सॉसेज और हैम, भुनी हुई मुर्गी, दलिया और दूध, और वहां अन्य बहुत अच्छी चीजें थीं. पीपे खुले थे, और लोग भरपेट खा-पी सकते थे!

दावत में राज्य के आधे लोग मौजूद थे: स्वामी और किसान, अमीर और गरीब, युवा और बूढ़े! और उस मूर्ख के दो चतुर भाई भी वहां थे. वे एक मेज पर पास-पास बैठे.

मूर्ख और उसके दोस्त अपने सुनहरे जहाज में उड़ते हुए आए, वे राजा की खिड़कियों के ठीक नीचे उतरे और जहाज से बाहर निकलकर दावत करने वालों में शामिल हो गए.

राजा को बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसने एक साधारण किसान को जहाज से बाहर निकलते हुए देखने के बारे में कभी सोचा तक नहीं था! वो आदमी नंगे पैर था और उसने एक खुरदरे कपड़े की बनी पैंट और पैबंद लगी लगी एक शर्ट पहन रखी थी.

राजा ने डर के मारे अपना सिर पकड़ लिया.



"मैं अपनी बेटी की शादी किसी किसान से कभी नहीं होने दूंगा!" उसने खुद से कहा. फिर राजा उस मूर्ख से छुटकारा पाने के बारे में सोचने लगा. अंत में राजा ने उस लड़के का परीक्षण करने के लिए उसे कई कठिन चुनौतियां देने का निर्णय लिया. "जाओ और वहां उस आदमी से कहो," उसने अपने एक नौकर से कहा, "कि वो मेरी बेटी से तब तक शादी नहीं कर पाएगा जब तक कि वो इस दावत के खत्म होने से पहले मेरे लिए कुछ "जीवित जल" नहीं लाता. और यदि वो ऐसा करने में विफल रहा, तो फिर मैं अपनी तलवार से उसका सिर कलम कर दूंगा!"

नौकर राजा की बात कहने के लिए चला, लेकिन बिग-ईयर (लम्बे कान), ने राजा की बात पहले ही सुन ली, और उसने वो पूरी बात मूर्ख को बता दी.

मूर्ख को दुःख हुआ और वो काफी निराश हुआ. वो वहीं बेंच पर सिर लटकाए बैठा रहा और कुछ भी खा-पी नहीं सका.

"तुम इतने दुखी क्यों हो?" तेज़ धावक ने उससे पूछा.

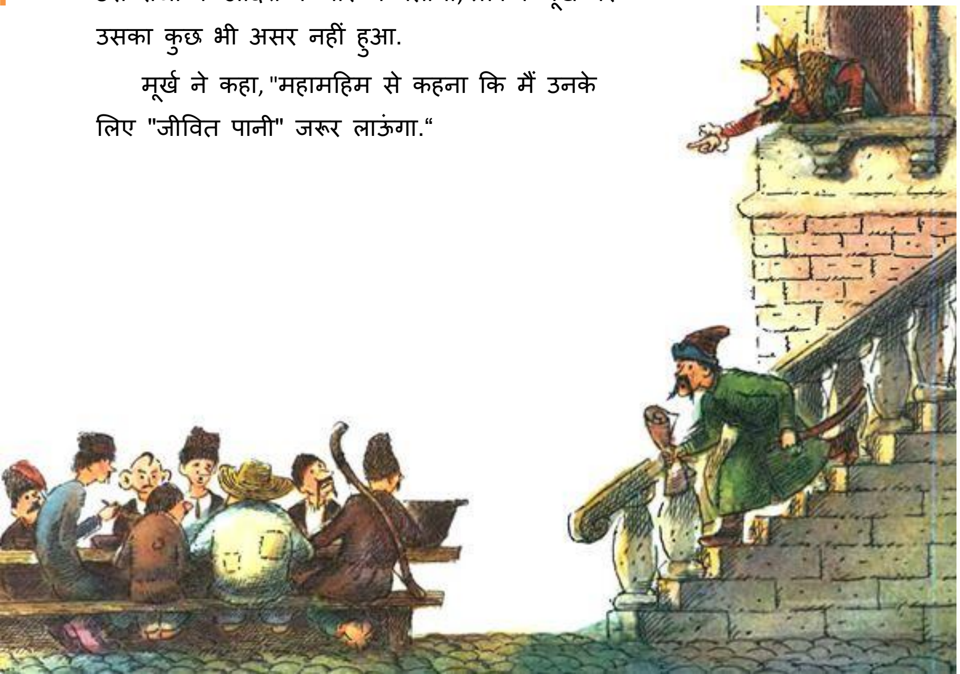
"राजा चाहता है कि मैं इस दावत के ख़त्म होने से पहले उसके लिए कुछ "जीवित पानी" लाऊं. तुम ही बताओ कि मैं वो कैसे करूं!"

"दुखी मत हो, मैं वो तुम्हारे लिए लाऊंगा."

"ठीक है, मैं देखूंगा कि तुम क्या करते हो!"

राजा का नौकर अब उसके पास आया और उसने उसे राजा के आदेश के बारे में बताया, लेकिन मूर्ख पर उसका कुछ भी असर नहीं हुआ.

मूर्ख ने कहा, "महामहिम से कहना कि मैं उनके लिए "जीवित पानी" जरूर लाऊंगा."



उसने तेज़ धावक की ओर देखा, जिसने तुरंत अपना वो पैर खोल दिया, जो उसके कान से बंधा हुआ था, और फिर वो एक गोली की तरह छूटकर आगे गया! लेकिन जब वो एक बोतल में कुछ "जीवित पानी" भर कर लाया, जिसे करने में उसे केवल एक क्षण लगा, तो उसे काफी थकान महसूस हुई.

"दावत अभी भी पूरे जोरों पर है, इसलिए मुझे लगता है कि मैं यहां इस झाड़ी में कुछ देर आराम करूंगा," तेज़ धावक ने खुद से कहा. और इन शब्दों के साथ वो घास पर लेट गया और गहरी नींद में सो गया. दावत लगभग ख़त्म हो चुकी थी, और यह देखकर कि तेज़ धावक वापस नहीं आया था, मूर्ख लगभग अधमरा हो गया था.

"यह मेरा अंत है!" उसने खुद से कहा.

बिग-ईयर (लम्बे कान), ने अपना कान ज़मीन पर रखा.

"देखो तेज़ धावक बेकार नहीं है," उसने कहा, "वो तो झाड़ी के नीचे गहरी नींद में सो रहा है."

"हम उसे कैसे जगाएं?" मूर्ख ने पूछा.

शिकारी अपने पैरों पर खड़ा हो गया.

"वो काम मैं करूंगा!" उसने कहा.

उसने अपना धनुष खींचा और सीधे झाड़ी पर तीर चलाया, उससे शाखाएं हिल गईं और तेज़ धावक जग गया, वो ऊपर कूदा, उसने एक कदम उठाया, और मेहमानों के भोजन समाप्त करने से पहले ही "जीवित पानी" के साथ महल में वापस आ गया.

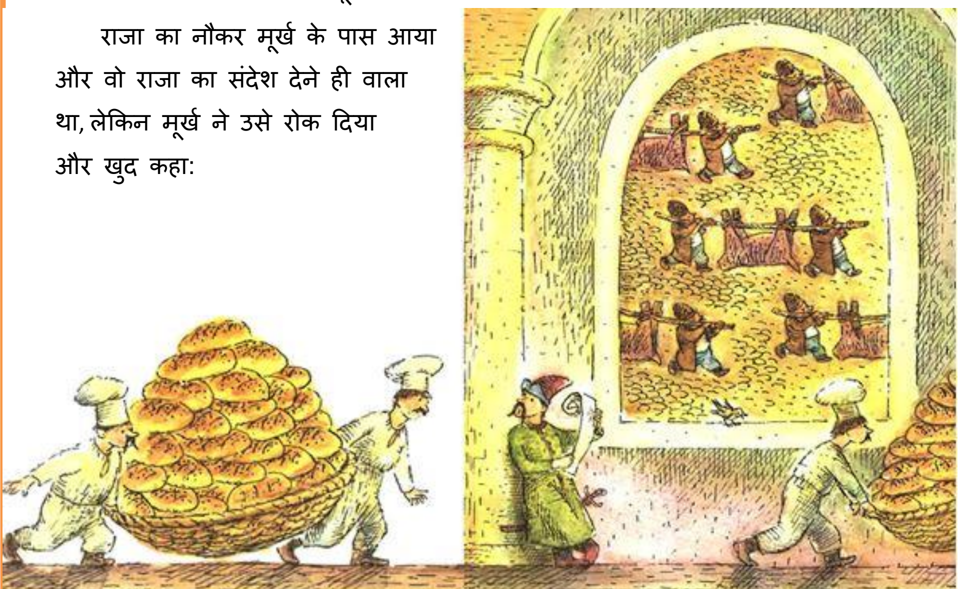
राजा को बहुत आश्चर्य हुआ लेकिन उसने कुछ नहीं कहा. वो अपने नौकर की ओर मुड़ा और उससे कहा कि उस मूर्ख से कहो कि वो राजकुमारी से तभी शादी कर सकेगा जब वो और उसके दोस्त एक बार में दो दर्जन भुने हुए बैल और एक दर्जन पूरी भट्टी की डबलरोटी खाएंगे. "अगर वे ऐसा करने में विफल रहे," राजा ने कहा, "तो मैं अपने तलवार से मूर्ख का सिर काट दूंगा!"

बिग-ईयर (लम्बे कान), ने वो सबकुछ सुना और उसने वो सब मूर्ख को बता दिया.

"मुझे क्या करना चाहिए!" मूर्ख चिल्लाया. "मेरे लिए एक डबलरोटी भी निगलना बहुत बड़ी बात है!" और फिर उसका मुंह लटक गया और वो बहुत उदास और निराश हो गया.

"तुम दुखी मत हो, मेरे दोस्त," ईट-ऑल यानि पेटू ने कहा. "मैं वो सब अकेले ही खा जाऊंगा फिर बाद में और मांगूंगा."

राजा का नौकर मूर्ख के पास आया और वो राजा का संदेश देने ही वाला था, लेकिन मूर्ख ने उसे रोक दिया और खुद कहा:



"मुझे पता है कि राजा मुझसे क्या करवाना चाहता है. जाओ और रसोइयों से खाना बनाने के लिए कहो."

दो दर्जन बैलों को जल्द ही भून लिया गया और एक दर्जन भट्टी भर डबलरोटियां पकाई गईं. फिर ईट-ऑल यानि पेटू ने बड़े उत्साह के साथ सारा भोजन सफाचट्ट कर डाला और उसके बाद और भी खाना मांगा.

"मैं इससे दोगुना खा सकता था!" उसने कहा.

अब, इससे राजा बहुत क्रोधित हुआ, और उसने मूर्ख और उसके दोस्तों को एक ही घूंट में एक दर्जन बीयर के पीपे और एक दर्जन शराब के पीपे पीने का आदेश दिया.

"यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया, तो मैं अपनी तलवार से उस मूर्ख का सिर काट दूंगा!" राजा ने कहा.

बिग-ईयर (लम्बे कान), ने वो सुना और फिर सब बात मूर्ख को बता दी. इस बार ड्रिंक-ऑल यानि पियक्कड़ मूर्ख की सहायता के लिए आगे आया.

"बिल्कुल मत डरो, मेरे दोस्त, मैं वो सब पी जाऊंगा और उसके बाद उनसे कुछ और शराब मांगूंगा," उसने कहा.

राजा के नौकरों ने बीयर के एक दर्जन पीपे और एक दर्जन शराब के पीपे निकाले, और ड्रिंक-ऑल यानि पियक्कड़ ने उन सभी को एक घूंट में पी डाला और एक बूंद तक नहीं छोड़ी.

"मेरे लिए वो एक मामूली काम है!" उसने कहा. "मैं इससे दोगुनी शराब पी सकता था."

राजा को अब समझ में आया कि मूर्ख से बाज़ी लेना आसान नहीं होगा.

उसने अपने लोहे के स्नानघर को लाल होने तक गर्म करने को कहा और फिर मूर्ख को उसमें स्नान करने का आदेश दिया.

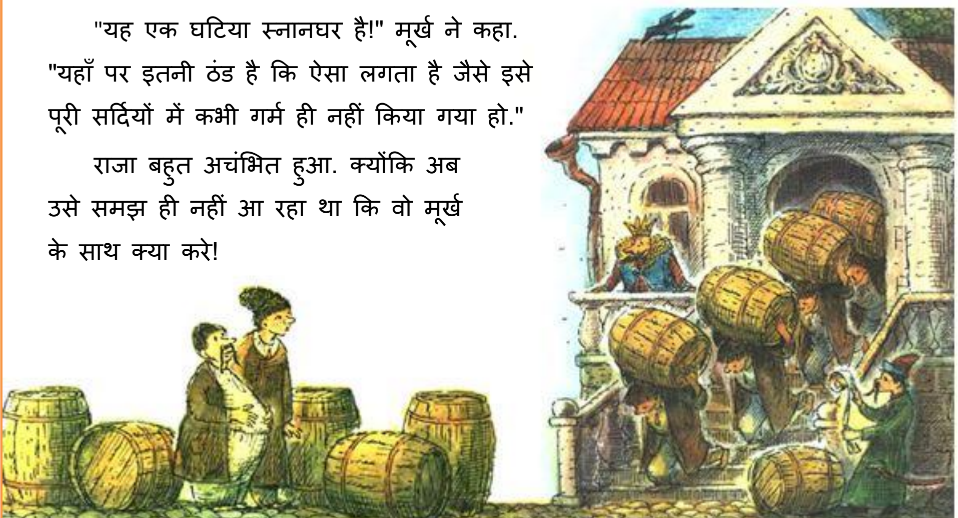
मूर्ख अपने मित्र फ्रीज़-ऑल के साथ मिलकर स्नान-घर की ओर गया. लोहे का स्नानघर एकदम तप रहा था और उसकी गर्मी ने उनकी सांस छीन ली! लेकिन तभी फ्रीज़-ऑल ने अपने जादुई भूसे को स्नानघर के फर्श पर बिखेर दिया, और उससे वहां इतनी ठंड हो गई कि मूर्ख को नहाने में कोई दिक्कत नहीं हुई. अंत में मूर्ख चूल्हे पर चढ़ गया और वहां बैठकर खुद को गर्म करने की कोशिश करने लगा.

राजा को लगा कि मूर्ख जलकर मर गया होगा और उसने अपने सेवकों को स्नानघर में यह देखने के लिए भेजा कि मूर्ख का क्या बचा था.

नौकर अंदर आए और उन्होंने देखा - कि वहां चूल्हे पर मूर्ख मज़े से बैठा था.

"यह एक घटिया स्नानघर है!" मूर्ख ने कहा. "यहाँ पर इतनी ठंड है कि ऐसा लगता है जैसे इसे पूरी सर्दियों में कभी गर्म ही नहीं किया गया हो."

राजा बहुत अचंभित हुआ. क्योंकि अब उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि वो मूर्ख के साथ क्या करे!



राजा ने बहुत देर तक सोचा, बहुत सोचा और अंत में उसे मूर्ख से छुटकारा पाने का एक तरीका समझ में आया.

"पड़ोसी देश का राजा हमसे लड़ने के लिए अपनी सेना भेज रहा है," राजा ने कहा, "और न केवल मैं उनसे लड़ूंगा, बल्कि साथ ही अपनी बेटी के चाहने वालों की परीक्षा भी लूंगा. मेरी बेटी उनमें से सबसे बहादुर आदमी से विवाह करेगी!"

फिर कई शूरवीर एक साथ खड़े हुए और लड़ने के लिए निकल पड़े. मूर्ख के दोनों बड़े भाई भी अपने घोड़ों पर चढ़ गए और उनमें शामिल हुए, लेकिन मूर्ख के पास कोई घोड़ा नहीं था और वो ऐसा नहीं कर सका. उसने राजा के सईस से एक घोड़े की विनती की. अंत में सईस ने उसे एक बूढ़ी घोड़ी दी जो बड़ी मुश्किल से सड़क पर चल सकती थी. सभी शूरवीर आगे बढ़ गए और उन्होंने मूर्ख को अपने पीछे छोड़ दिया. मूर्ख, घोड़ी को उसकी जगह से हिलाने तक में असमर्थ रहा!

अचानक मूर्ख ने जंगल से बाहर अपनी ओर आते हुए उस बूढ़े व्यक्ति को देखा जिसने उसकी उड़ने वाला जहाज़ दिलाने में मदद की थी. "दुखी मत हो, मेरे बेटे, मैं तुम्हारी मदद करूंगा," बूढ़े ने कहा. "जब तुम बड़े जंगल से होकर गुजर रहे होगे तो तुम्हें अपने दाहिनी ओर एक विशाल, फैला हुआ नीबू का पेड़ दिखाई देगा. नीबू के पेड़ को खुलने के लिए कहना, वो ऐसा करेगा, और फिर काठी वाला एक घोड़ा आएगा जिसकी काठी पर एक बैग बंधा होगा. उसके बाद तुम्हें जब कभी भी मदद की ज़रूरत हो तो तुम बस यह कहना, 'आओ, बैग से बाहर निकलो!' और फिर देखना कि क्या होता है. अच्छा अब अलविदा."

मूर्ख बहुत खुश हुआ. वो अपनी घोड़ी की पीठ से नीचे उतरा और जंगल की ओर भागा, जहां उसे जल्द ही विशाल, फैला हुआ नीबू का पेड़ मिला.

"खुलो, नीबू के पेड़!" वो चिल्लाया.

नीबू के पेड़ ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया, और उसमें से सोने की अयाल और काठी के साथ एक बहुत ही अद्भुत घोड़ा निकला, जो इतनी अच्छी तरह से सुसज्जित था और ऐसे चमक रहा था जैसे उसमें से आग निकल रही हो. काठी से एक बैग बंधा हुआ था और उसके पार एक कोट, एक हेलमेट, एक तलवार और एक ढाल लटकी हुई थी.

मूर्ख ने हेलमेट और कोट पहन लिया.

"आओ, अब अपने बैग से बाहर निकलो!" वो चिल्लाया.

और फिर भारी संख्या में लोग, एक पूरी सेना, उस बैग में से बाहर निकलकर आई.



मूर्ख, घोड़े की पीठ पर कूद गया, और सेना के आगे सरपट दौड़ते हुए सीधे दुश्मन की ओर बढ़ा. और उसने इतनी अच्छी तरह से लड़ाई लड़ी, अपनी तलवार दाएं और बाएं चलाई, कि उसने युद्ध जीत लिया. हालांकि, लड़ाई के दौरान उसका पैर घायल हो गया. और तभी राजा और उसकी बेटी घोड़े पर सवार होकर उसकी ओर आये.

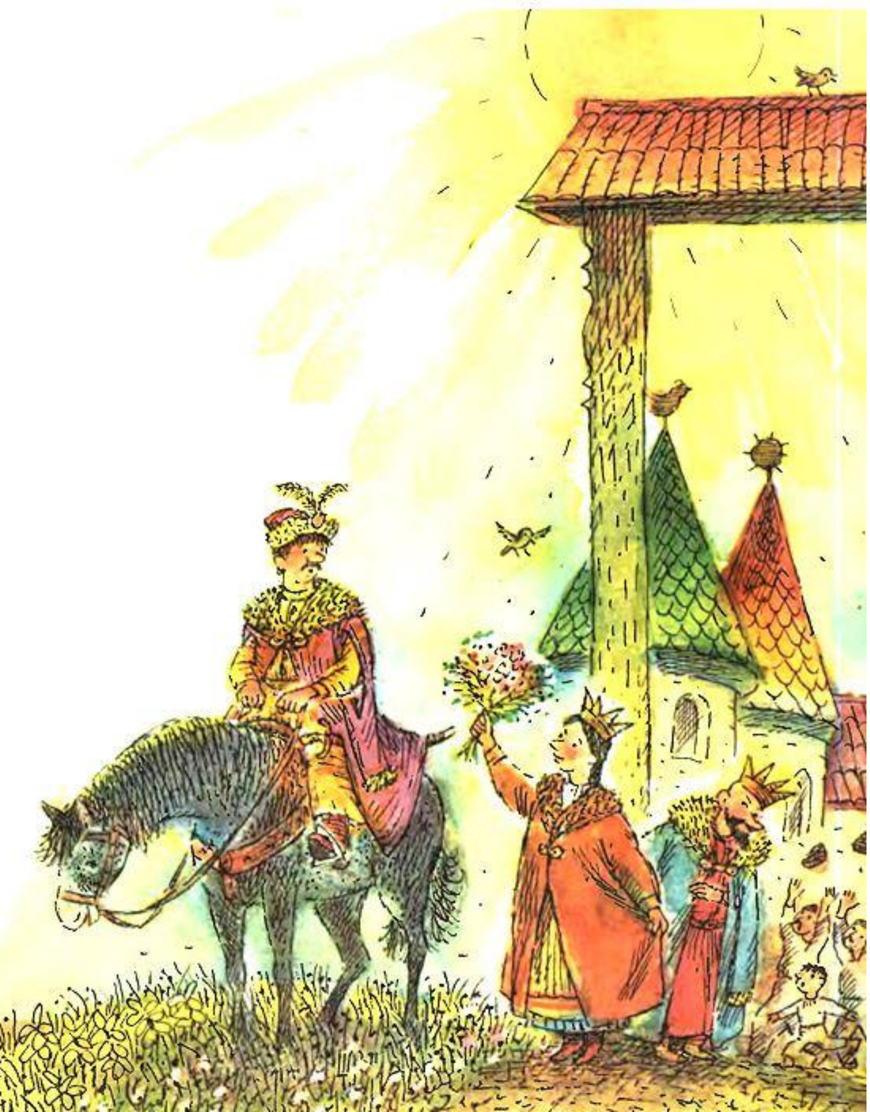
यह देखकर कि जो शूरवीर इतनी बहादुरी से लड़ा था वो घायल हो गया है, राजकुमारी ने अपना रुमाल निकाला, उसे दो हिस्सों में फाड़ा और उसके घाव पर उससे पट्टी बांधी.

लड़ाई ख़त्म होने के बाद, मूर्ख जंगल में भाग गया और वो तभी रुका जब उसने अपने सामने विशाल, फैले हुए नीबू के पेड़ को देखा.

"खुलो, नीबू के पेड़!" वो चिल्लाया.

नीबू के पेड़ ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया, और उसने अपना घोड़ा, अपना बैग, अपना कोट, हेलमेट, तलवार और ढाल उसके अंदर छिपा दिए और अपनी पैबंद लगी शर्ट और पुरानी पैंट फिर से पहन ली.

जहां तक राजा की बात है, उसने अब अपने सेवकों को देश के सभी कोनों में भेजा और उनसे उस बहादुर शूरवीर को खोजने के लिए कहा जिसके घाव पर राजकुमारी ने अपने रुमाल से पट्टी बांधी थी. नौकरों ने उसे अमीरों के बीच खोजा, लेकिन वो नहीं मिला, इसलिए राजा ने उन्हें गरीबों के बीच भी खोजने का आदेश दिया. नौकर घर-घर गए, और जब उन्होंने खोज लगभग छोड़ दी, तब वे मूर्ख की झोपड़ी के पास पहुंचे. वो शहर के बिल्कुल किनारे पर स्थित एक छोटी सी जगह थी, और जब दो नौकर अंदर गए तो उन्होंने देखा कि मूर्ख के दो बड़े भाई वहां खाना खा रहे थे और मूर्ख उनके लिए केक पका रहा था.



उसके एक पैर पर राजकुमारी के रूमाल की पट्टी बंधी हुई थी. मूर्ख ने देखा कि राजा के नौकर उसे अपने साथ ले जाना चाहते थे, लेकिन मूर्ख ने उनसे ऐसा न करने की विनती की, यह कहते हुए कि वो इतना गंदा था और वो उस हाल में राजा के सामने पेश नहीं हो सकता था.

"कम-से-कम मुझे पहले नहाने का समय दो," उसने कहा, "और फिर कुछ खाना खाने का. और तब तक तुम मेरा यहीं इंतज़ार करो."

"ठीक है, लेकिन बहुत ज्यादा देर मत लगाना!" उन्होंने कहा.

सेवक मेज पर बैठ गए और केक खाने लगे. फिर मूर्ख जंगल की ओर भागा और बड़े, फैले हुए नींबू के पेड़ तक पहुंचा.

"खुलो, नीबू के पेड़!" वो चिल्लाया.

नीबू के पेड़ ने वैसा ही किया जैसा मूर्ख ने उससे कहा. मूर्ख का घोड़ा पेड़ में से बाहर निकला और मूर्ख के चढ़ने का इंतजार करने लगा.

मूर्ख ने अब अपना कोट और हेलमेट निकाला और उन्हें पहना. अब वो इतना सुंदर लग रहा था कि किसी से भी उसकी तुलना नहीं की जा सकती थी. वो घोड़े की पीठ पर कूदा और महल की ओर सरपट दौड़ा. जब राजा और राजकुमारी ने उसे देखा, तो वे बेहद खुश हुए! उन्होंने बहुत सम्मान के साथ उसका स्वागत किया और उसी समय उसकी और राजकुमारी की शादी हो गई.